पाठ 12. ऐसे थे विद्यासागर

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को समाज सुधारक एवं महापुरुष कहे जाने वाले ईश्वरचंद्र विद्यासागर के जीवन से अवगत कराना है। इस पाठ में उनके बालपन की एक घटना का वर्णन किया गया है। इस पाठ द्वारा बच्चों में दूसरों की सहायता करना, अपनी माँ की सेवा करना तथा परोपकार जैसे गुण विकसित हो पाएँगे।

पाठ का सारांश

पश्चिम बंगाल के एक गाँव के एक परिवार में माँ-बेटा रहते थे। एक दिन उनके दरवाज़े पर एक बूढ़ी औरत भीख माँगने आई। उसकी आवाज़ सुनकर घर के अंदर से एक बालक निकलकर आया। बूढ़ी औरत ने उसे 'बेटा' कहकर भीख देने के लिए कहा। बालक ने अपनी माँ से कहा कि एक बूढ़ी माँ मुझे बेटा कहकर कुछ माँग रही हैं। माँ ने कहा कि अभी तो उसे देने के लिए घर में कुछ नहीं है। इसपर बालक ने माँ से उनका सोने का कंगन देने के लिए कहा तथा माँ को वचन दिया कि जब वह बड़ा होकर कमाएगा तब उनके लिए नए कंगन बनवा देगा। माँ ने खुशी-खुशी कंगन बेटे को दे दिया। बूढ़ी औरत कंगन पाकर बालक को ढेर सारी दुआएँ देती हुई चली गई। उस बालक ने बहुत मेहनत से पढ़ाई की। बड़ा होने पर उसका नाम बड़े-बड़े विद्वानों में गिना जाने लगा। सब लोग अब उसे ईश्वरचंद्र विद्यासागर के नाम से जानते थे। ईश्वरचंद्र विद्यासागर बहुत दयालु स्वभाव के थे। बचपन में माँ को दिया वचन ईश्वरचंद्र को आज भी याद था। उसने माँ से कंगन बनवाने के लिए कहा पर माँ की इच्छानुसार उन्होंने जगह-जगह विद्यालय तथा अस्पताल खुलवाए।

अध्यापन संकेत

पाठ वाचन से पूर्व बच्चों को ईश्वरचंद्र विद्यासागर के बारे में बताएँ। बच्चों को समझाएँ

- किसी की मदद करना अच्छी बात होती है।
- माता-पिता तथा बड़ों की बात माननी चाहिए।
- मन लगाकर अपना काम करना चाहिए।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।